بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in
.Mob:9682536974, Khulasa khutba-13.06.25

मक्का पर विजयी युद्ध के परिपेक्ष में सीरते नबवी ﷺ का बयान तथा ईरान इस्राईल विवाद के विषय में दुआओं की प्रेरणा।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

बयान फर्मूदः 13 जून 2025 , स्थान मस्जिद मुबारक, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया–

कुछ जुमः पहले मक्का पर विजय के हवाले से आरम्भिक वर्णन किया था,आज इस हवाले से आगे का घटना क्रम बयान करूंगा।

इस युद्ध के कारणों के विषय में बयान हुआ है कि इसका तुरंत कारण यह हुआ कि क़ुरैश ने उस समझौते को तोड़ दिया जो हुदैबियः में हुआ था और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सन्देश वाहक को अति अहंकार के रूप में कह दिया कि हम सन्धि तोड़ते हैं और हम मुहम्मद (स.) से युद्ध करेंगे। जब रसूलुल्लाह स. को यह सूचना मिली तो आप स. ने मक्के जाने का निश्चय किया।

उनके सन्धि भंग करने का विवरण इस प्रकार है कि जब हुदैबियः का समझौता हुआ तो उसमें एक शर्त यह भी थी कि अरब के क़बीलों में से जो चाहे, वह रसूलुल्लाह स. के साथ सन्धि कर ले और

जो चाहे वह कुरैश के साथ समझौता कर ले। अतः बनू बकर एवं बनू खज़ाआ, जो हरम के आस पास निवास करते थे उनमें से बनू खज़ाआ ने रसूलुल्लाह स. के साथ सन्धि कर ली और उनके दुश्मन क़बीले बनू बकर ने क़ुरैश के साथ समझौता कर लिया और इस प्रकार दोनों क़बीले आपस की लड़ाई से बच गए। इस्लाम के आगमन से पूर्व बनू खज़ाआ और बनू बकर की लड़ाई थी जिसमें बनू बकर ने एक ख़ज़ाई व्यक्ति की हत्या की तथा बनू खज़ाआ ने बनू बकर के तीन आदमी हरम (ख़ाना काबा) की सीमा में मार डाले थे। बनू बकर तथा बनू खज़ाअ: इसी अवस्था में थे, अर्थात उनकी आपस में लड़ाईयां चल रही थीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अवतरण हुआ तो लोग इस्लाम के विषय में व्यस्त हो गए, नई चीज़ उनके सामने आ गई, इस बारे में बातें होने लगीं और एक दूसरे से रुक गए, किन्तु वे दिलों में राग द्वेष छुपाए हुए थे।

जब शअबान 8 हिजरी का महीना आया और हुदैबियः की सन्धि को बाईस महीने बीत गए तो बनू बकर के एक व्यक्ति ने रसूलुल्लाह स. की शान में उपहास किया, अर्थात अपमान जनक कविता कही। बनू खज़ाअ: के एक युवा ने उसको गाते सुना उसने उस व्यक्ति को मारा और उसका सिर फाड़ दिया। इस घटना पर दोनों क़बीलों में झगड़ा हो गया, जबकि पहले से ही इन क़बीलों में शत्रुता चली आ रही थी। बनू बकर के जिस व्यक्ति ने ये अपमान जनक कविता लिखी थी वह बनू बकर के एक ख़ानदान बनू नफ़ासः का एक व्यक्ति था। जब उस कवि को बनी खज़ाअ: के एक युवा ने ज़ख़्मी कर दिया तो बनू बकर में से बनू नफ़ासा ने क़ुरैश से बनू खज़ाअ: के विरुद्ध अस्त्र शस्त्र एवं कुछ लोग दिए जाने की प्रार्थना की।

क़ुरैशियों ने अबू सुफ़यान के अतिरिक्त उनकी सहायता करने का वचन दे दिया। उसने न यह सुझाव दिया था और न ही उसे इसके विषय में जानकारी थी। एक कथन यह है कि उसके साथ विचार विमर्श किया गया था किन्तु उसने लड़ने से इन्कार कर दिया था। परन्तु इसके बावजूद क़ुरैश ने अस्त्र शस्त्र, घोड़ों एवं आदमियों से उनकी मदद की। इन सबने गुप्त रूप से आक्रमण किया ताकि बनू खज़ाआ अपना बचाओ न कर सकें। बनू खज़ाआ सन्धि के कारण अपने आपको सुरक्षित समझ रहे थे और निश्चिन्त थे। क़ुरैश, बनू बकर और बनू नफ़ासा ने वतीर नामक स्थान पर मिलने का वादा किया, यह मक्का मुकर्रमा का निचला भाग था, बनू खज़ाआ के घर इसी स्थान पर थे। ये लोग जो विरोधी थे, निर्धारित समय पर वहाँ मिले। क़ुरैशियों के मुख्याओं ने भेस बदले हुए थे और अपने चेहरे कपड़ों से छुपाए हुए थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने भी इसको इतिहास के रूप में बयान किया है, इस प्रकार लिखा है कि मक्का वालों ने अबू सुफ़यान को मदीना रवाना किया ताकि वह किसी तरह मुसलमानों को हमले

से रोक सके। अबू सुफ़यान ने मदीने पहुँच कर रसूलुल्लाह स. पर ज़ोर देना शुरू किया कि चूंकि हुदैबियः की सन्धि के समय वह उपस्थित नहीं था, इस लिए पुनः सन्धि की जाए, परन्तु रसूलुल्लाह स. ने उसकी बात का कोइ जवाब न दिया, क्यूंकि जवाब देने से भेद प्रकट हो सकते थे। अबू सुफ़यान ने निराश होकर एवं घबरा कर मस्जिद में खड़े होकर यह एलान किया कि ऐ लोगो! मैं मक्का वालों की ओर से नए सिरे से आप लोगों के लिए शान्ति की घोषणा करता हूँ। यह बात सुन कर मुसलमान उसकी मूर्खता पर हंस पड़े और रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया- अबू सुफ़यान! यह बात तुम केवल एक पक्ष की ओर से कह रहे हो, हमने तुमसे कोई ऐसा समझौता नहीं किया। अतएव इसी घटना का वर्णन हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने भी किया है अपनी शैली में, वे लिखते हैं कि हज़रत मैमूना फ़रमाती हैं कि एक रात मेरी बारी में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे यहाँ सो रहे थे। जब आप स. तहज्जुद के लिए उठे तो आप वज़ू फ़रमाते हुए बोले, और मुझे आवाज़ आई कि आप फ़रमा रहे हैं- लब्बैक लब्बैक लब्बैक। इसके बाद आप स. ने फ़रमाया- नुसरत नुसरत नुसरत (सहायता)। वे कहती हैं- जब आप स. बाहर तशरीफ़ लाए तो मैंने कहा कि या रसूलुल्लाह! क्या कोई आदमी आया था जिससे आप बातें कर रहे थे। आपने फ़रमाया हाँ, मेरे सामने कश्फ़ की अवस्था में खज़ाआ का एक दल पेश हुआ और वे शोर मचाते चले जा रहे थे कि हम मुहम्मद को उसके ख़ुदा की क़सम दे कर कहते हैं कि तेरे साथ और तेरे बाप दादों के साथ हमने समझौते किये थे, और हम तेरी सहायता करते चले आए हैं, किन्तु क़ुरैशियों ने हमारे साथ सन्धि का उल्लंघन किया और रात के समय हम पर हमला करके, जबकि हममें से कोई सजदे में था तथा कोई रुकूअ में, हमारी हत्या कर डाली, अब हम तेरा सहयोग मांगने के लिए आए हैं। तात्पर्य यह है कि मैंने देखा कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- मैंने देखा कि खज़ाआ का आदमी खड़ा है, जब कश्फ़ में मुझे वह आदमी नज़र आया तो मैंने कहा, लब्बैक लब्बैक लब्बैक, अर्थात मैं तुम्हारी सहायता के लिए उपस्थित हूँ, तीन बार कहा। फिर मैंने कहा, नुसरत नुसरत नुसरत, अर्थात तुम्हारी मदद की जाएगी, यह भी तीन बार कहा। फिर हज़रत आयशा फ़रमाती हैं कि उसी दिन सुबह के समय रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे घर तशरीफ़ लाए और आपने फ़रमाया- खज़ाआ के साथ एक भयानक घटना हुई है। हज़रत आयशा फ़रमाती हैं कि मैंने समझ लिया कि खज़ाआ के साथ भयंकर घटना यही हो सकती है कि वे मक्के की सीमाओं पर हैं और मक्का वाले, जिनका बनू बकर के साथ समझौता हुआ है, वे खज़ाआ पर हमला कर दें। मैंने कहा या रसूलुल्लाह क्या यह सम्भव है कि इतनी क़स्मों के बाद क़ुरैशी लोग सन्धि तोड़ दें और खज़ाआ पर आक्रमण कर दें। आपने फ़रमाया- हाँ, अल्लाह तआला की हिकमत के अनुसार वे इस सन्धि का उल्लंघन कर रहे हैं और वह हिकमत यही थी कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

को हमले की आज्ञा नहीं थी, तथा सन्धि टूटने से वह आज्ञा मिल गई। हज़रत आयशा कहती हैं कि मैंने कहा- या रसूलुल्लाह! क्या इसका परिणाम शुभ होगा? आपने फ़रमाया- हाँ, परिणाम अच्छा ही निकलेगा। यह अभी और विस्तार से घटना है, आगे भी चलेगी।

हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने वर्तमान ईरान इस्राईल संग्राम के विषय में दुआओं की प्रेरणा करते हुए फ़रमाया कि इस समय दुनिया की सामान्य स्थिति के बारे में भी कहना चाहता हूँ, प्रायः कहता हूँ, दुआएं करते रहें। युद्ध के फैलने की संभावनाएं बढ़ती जा रही हैं, अल्लाह तआला से दुआ करें कि अल्लाह तआला इसके विनाशकारी प्रभाव से हमें सुरक्षित रखे, क्यूंकि अब तो ईरान पर इस्राईल ने हमला कर दिया है और यह युद्ध की स्थिति भयावह हो चुकी है।

ये लोग तो अब यही चाहेंगे, इज़राइल की सरकार, कि एक एक करके सारे मुस्लिम देशों को हानि पहुंचाएं, परन्तु मुस्लिम देश सोए हुए हैं, अपनी उन्नति तथा अपनी अन्य प्राथमिकताएं जो हैं, उन्हीं में डूबे हुए हैं और इनको समझ नहीं आ रही कि क्या होना है।

मुसलमानों के न तो कर्म रहे, न उनके दुआओं की ओर ध्यान हैं, और फिर ऐसी अवस्था में, फिर जो हानि होगी, उसकी ये कल्पना भी नहीं कर सकते। अल्लाह तआला इनको बुद्धि दे और ये इस ओर ध्यान करें अपनी एकता स्थापित करने का प्रयास करें।

यह नहीं कि यह अमुक समुदाय है और अमुक सम्प्रदाय है, तो हम इसकी मदद नहीं कर रहे। सारे देश ख़तरे में हैं क्यूंकि **अलकुफ्रु मिल्लतुन वहिदः** हो चुका है, काफ़िर जो हैं वे सब एक संगठित दल बन गए हैं और अब मुसलमानों को भी **उम्मते वाहिदः** बनना पड़ेगा, तभी इनका बचाव है, इसके बिना कोई उपाए नहीं। अल्लाह तआला हर निर्दोष को, हर एक पीड़ित को, बड़े आघात से बचाए और हमें दुआओं की ओर अत्यधिक ध्यान देना चाहिए, अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ भी अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब